कि मय्यत को मस्जिद में दाख़िल करना और वहाँ उसका जनाज़ा पढ़ना सही है। इमाम शाफ़िई और अह़मद और इस्हाक़ और जुम्हूर का भी यही क़ौल है। जो लोग मय्यत के नापाक होने का ख़्याल रखते हैं उनके नज़दीक मस्जिद में न मय्यत का लाना दुरुस्त है और न वहाँ नमाज़े जनाज़ा जाइज़। मगर ये ख़्याल बिलकुल ग़लत़ है। मुसलमान मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं हुआ करता। जैसा कि ह़दीष़ में स़ाफ़ मौजूद है, **इन्नल मूमिन ला युन्जिसु ह़य्यन व ला मय्यितन** बेशक मोमिन मुर्दा और जिन्दा नजिस नहीं होता या'नी नजासते ह़क़ीक़ी से वो दूर होता है।

बनू बैज़ा तीन भाई थे। सहल व सुहैल और स़फ़्वान उनकी वालिदा को बत़ौरे वस्फ़ बैज़ा कहा गया। उसका नाम दअ़द था और उनके वालिद का नाम वहब बिन रबीआ़ क़ुरैशी फ़ह्री था।

इस बह़ष़ के आख़िर में ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब (रह.) फ़र्माते हैं, **वल्हक़्क़ु अन्नहू यजूज़ुस्सलातु अलल्जनाइज़ि फिल्मस्जिदि मिन गैरि कराहतिन वल्अफ़ज़लु अस़्सलातु अ़लैहा खारिजल्मस्जिदि लिअन्न अक्ष़र स़लवातिही (ﷺ) अलल्जनाइज़ि कान फिल्मुसल्ला** (मिर्आ़त) या'नी ह़क़ यही है कि मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा बिला कराहत दुरुस्त है और अफ़ज़ल ये है कि मस्जिद से बाहर पढ़ी जाए क्योंकि अकष़र नबी करीम (ﷺ) ने इसको ईदगाह में पढ़ा है।

इस ह़दीष़ से ये भी ष़ाबित होता है कि इस्लामी अ़दालत में अगर कोई ग़ैर–मुस्लिम का कोई मुक़द्दमा दायर हो तो फ़ैसला बहरहाल इस्लामी क़ानून के तह़त किया जाएगा। आप (ﷺ) ने उन यहूदी ज़ानियों के लिये संगसारी का हुक्म इसलिये भी स़ादिर फ़र्माया कि ख़ुद तौरात में भी यही हुक्म था जिसे ज़ुलम-ए-यहूद ने बदल दिया था। आप (ﷺ) ने गोया उन ही की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ फ़ैसला फ़र्माया। (ﷺ)

बाब 61 : क़ब्रों पर मस्जिद बनाना मकरूह है

٦١- بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنِ اتِّخَاذِ الْمَسَاجِدِ عَلَى الْقُبُورِ

और जब ह़सन बिन ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) गुज़र गये तो उनकी बीवी (फ़ातिमा बिन्ते हुसैन) ने एक साल तक क़ब्र पर ख़ैमा लगाए रखा। आख़िर ख़ैमा उठाया गया तो लोगों ने एक आवाज़ सुनी, क्या लोगों ने जिनको खोया था, उनको पा लिया? दूसरे ने जवाब दिया नहीं बल्कि नाउम्मीद होकर लौट गये।

وَلَمَّا مَاتَ الْحَسَنُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ ضَرَبَتِ امْرَأَتُهُ الْقُبَّةَ عَلَى قَبْرِهِ سَنَةً، ثُمَّ رُفِعَتْ، فَسَمِعُوا صَائِحًا يَقُولُ: أَلاَ هَلْ وَجَدُوا مَا فَقَدُوا؟ فَأَجَابَهُ آخَرُ: بَلْ يَئِسُوا فَانْقَلَبُوا.

तश्रीह : ये ह़सन, ह़ज़रत ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) के बेटे और बड़े ष़िक़ात ताबेईन में से थे। उनकी बीवी फ़ातिमा ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) की बेटी थीं और उनके एक लड़का था उनका नामे-नामी भी ह़सन था। गोया तीन पुश्त तक यही मुबारक नाम रखा गया। उनकी बीवी ने अपने दिल को तसल्ली देने और ग़म ग़लत़ करने के लिये साल भर तक अपने मह़बूब शौहर की क़ब्र के पास डेरा रखा। इस पर उनको हातिफ़े ग़ैब से मलामत हुई और वो वापस हो गईं।

1330. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान ने, उनसे हिलाल वज़्ज़ान ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़े-वफ़ात में फ़र्माया कि यहूद और नस़ारा पर अल्लाह की लअ़नत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ऐसा डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहती (और हुज्रे में न होती) क्योंकि मुझ

١٣٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ هِلاَلٍ هُوَ الْوَزَّانُ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: ((لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ

1330. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान ने, उनसे हिलाल वज़्ज़ान ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़े-वफ़ात में फ़र्माया कि यहूद और नसारा पर अल्लाह की लअ़नत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ऐसा डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहती (और हुज्रे में न होती) क्योंकि मुझ

١٣٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ هِلاَلٍ هُوَ الْوَزَّانُ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ

डर इसका है कि कहीं आपकी क़ब्र भी मस्जिद न बनाली जाए।
(राजेअ : 430)

مَسْجِدًا)). قَالَتْ : وَلَوْ لاَ ذَلِكَ لأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا.
[راجع: ٤٣٥]

तश्रीह : या'नी ख़ुद क़ब्रों को पूजने लगे या क़ब्रों पर मस्जिद और गिर्जाघर बनाकर वहाँ अल्लाह की इबादत करने लगे तो बाब की मुताबक़त ह़ासिल हो गई। इमाम इब्ने क़य्यिम ने कहा कि जो लोग क़ब्रों पर वक़्त मुअ़य्यन (निर्धारित) करके जमा होते हैं वो भी गोया क़ब्र को मस्जिद बनाते हैं। दूसरी ह़दीष़ में है मेरी क़ब्र को ईद न कर लेना या'नी ईद की त़रह़ वहाँ मेले और मजमा न करना। जो लोग ऐसा करते हैं वो भी उन यहूदियों और नस़रानियों की त़रह़ हैं जिन पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने लअ़नत की।

अफ़सोस! हमारे जमाने में क़ब्रपरस्ती ऐसी शाए हो रही है कि ये नाम के मुसलमान अल्लाह और रसूल से ज़रा भी नहीं शर्माते, क़ब्रों को इस क़दर पुख़्ता शानदार बनाते हैं कि उनकी इमारत को देखकर मसाजिद का शुब्हा होता है। हालाँकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने सख़्ती के साथ क़ब्रों पर ऐसी ता'मीरात के लिये मना किया है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू हियाज अस्दी को कहा था **अब्अषुक अ़ला मा बअ़ष़नी अ़लैहि रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तदउतिम्ष़ालन इल्ला तमस्तहू वला कब्रन मुश्रफ़न इल्ला सव्वैतहू रवाहुल्जमाअतु इल्लल्बुख़ारी वब्नु माजा** या'नी क्या मैं तुमको उस ख़िदमत के लिये न भेजूँ जिसके लिये मुझे आँह़ज़रत (ﷺ) ने भेजा था। वो ये कि कोई मूरत ऐसी न छोड़ जिसे तू मिटा न दे और कोई ऊँची क़ब्र न रहे जिसे तू बराबर न कर दे।

इस ह़दीष़ से मा'लूम होता है क़ब्रों का ह़द से ज़्यादा ऊँचा करना भी शारेअ़ (ﷺ) को नापसंद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **फ़ीहि अन्नस्सुन्नत इन्नल्कबर ला युर्फउ रफ़अन कष़ीरा मिन गैरि फर्क़िन बैन कान**

مَسْجِدًا)). قَالَتْ : وَلَوْ لَا ذٰلِكَ لَأَبْرَزُوا قَبْرَهُ، غَيْرَ أَنِّي أَخْشَى أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا.

[راجع: ٤٣٥]

डर इसका है कि कहीं आपकी क़ब्र भी मस्जिद न बनाली जाए।
(राजेअ : 430)

तश्रीह : या'नी ख़ुद क़ब्रों को पूजने लगे या क़ब्रों पर मस्जिद और गिर्जाघर बनाकर वहाँ अल्लाह की इबादत करने लगे तो बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। इमाम इब्ने क़य्यिम ने कहा कि जो लोग क़ब्रों पर वक़्त मुअय्यन (निर्धारित) करके जमा होते हैं वो भी गोया क़ब्र को मस्जिद बनाते हैं। दूसरी हदीष में है मेरी क़ब्र को ईद न कर लेना या'नी ईद की तरह वहाँ मेले और मजमा न करना। जो लोग ऐसा करते हैं वो भी उन यहूदियों और नसरानियों की तरह हैं जिन पर आँहज़रत (ﷺ) ने लअनत की।

अफ़सोस! हमारे जमाने में क़ब्रपरस्ती ऐसी शाए हो रही है कि ये नाम के मुसलमान अल्लाह और रसूल से ज़रा भी नहीं शर्माते, क़ब्रों को इस क़दर पुख़्ता शानदार बनाते हैं कि उनकी इमारत को देखकर मसाजिद का शुब्हा होता है। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने सख़्ती के साथ क़ब्रों पर ऐसी ता'मीरात के लिये मना किया है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू हियाज अस्दी को कहा था **अब्अषुक अ़ला मा बअषनी अ़लैहि रसूलुल्लाहि (ﷺ) ला तदउतिम्षालन इल्ला तमस्तहू वला कब्रन मुश्रफ़न इल्ला सव्वैतहू रवाहुल्जमाअतु इल्लल्बुख़ारी वब्नु माजा** या'नी क्या मैं तुमको उस ख़िदमत के लिये न भेजूँ जिसके लिये मुझे आँहज़रत (ﷺ) ने भेजा था। वो ये कि कोई मूरत ऐसी न छोड़ जिसे तू मिटा न दे और कोई ऊँची क़ब्र न रहे जिसे तू बराबर न कर दे।

इस हदीष से मा'लूम होता है क़ब्रों का हद से ज़्यादा ऊँचा करना भी शारेअ (ﷺ) को नापसंद है। अ़ल्लामा शौकानी (रह.) फ़र्माते हैं, **फ़ीहि अन्नस्सुन्नत इन्नल्कब्र ला युर्फ़उ रफ़अन कषीरा मिन गैरि फर्क़िन बैन कान फ़ाज़िलन व मन कान गैर फ़ाज़िलिन वज़्ज़ाहिरू अन्न रफअल्क़ुबूरि ज़ियादतुन अलल्कद्रिल्माज़ूबि हरामुन** या'नी सुन्नत यही है कि क़ब्र को हद से ज़्यादा बुलन्द न बनाया जाए ख़्वाह वो किसी फ़ाज़िल, आ़लिम या सूफ़ी की हो या किसी ग़ैर फ़ाज़िल की और ज़ाहिर है कि शरई इजाज़त से ज़्यादा क़ब्रों को ऊँचा करना हराम है। आगे अ़ल्लामा फ़र्माते हैं,

व मिन रफ़इल्क़ुबूरि अद्दाखिलु तहतल्हदीषि दुख़ूलन औलियाउ अल्क़ुब्बु वल्मशाहिदुल्मअमूरतु अलल्क़ुबूरि व अयज़न हुव मिन इत्तिख़ाज़िल्क़ुबूरि मसाजिदु व कद लअनन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ाइल ज़ालिक कमा सयाती व कम क़द सराअन तशईदि अब्नियतिल्क़ुबूरि व तहसीनिहा मिम्मफ़ासिदिन यब्की लहल्इस्लामु मिन्हा इतिकादुल्जहलति लहा कइतिकादिल्कुफ़्फ़ारि लिल्अस्नामि व अ़ुज़ुम ज़ालिक फज़न्नू अन्नहा क़ादिरतुन अ़ला जलबिल्मनाफ़िइ व दफ़इज़्ज़ररि फजअलूहा मक्सदत्तलबि क़ज़ाअल्हवाइजि व मल्जअलिनजाहिल्मतालिबि व सालू मिन्हा मा यस्अलुहूल्इबादु मिन रब्बिहिम व शद्दू इलयहर्रिहाल व तम्सहू बिहा वस्तगाषू व बिल्जुम्लति अन्नहुम लम यदऊ शयअम्मिम्मा कानतिल्ज़ाहिलिय्यतु तफ़्अलुहू बिल्अस्नामि इल्ला फअलुहू फ़इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन व मअ हाजल्मुन्करिश्शनीइ वल्कुफ़्रिल्फ़जीइ ला नजिदु मंय्यगजबु लिल्लाहि व युगारू हमिय्यल लिद्दीनिल्हनीफ़ि ला आलिमन व ला मुतअल्लिमन व ला अमीरन व ला वज़ीरन व ला मलिकन तुवारिदु इलैना मिनल्अख़बारि मा ला यशुक्कु मअहू अन्न कषीरम्मिन हाउलाइल्मकबूरीन औ अक्षरूहुम इज़ा तवज्जहत अ़लैहि यमीनुन मिन जिहति खस्मिही हलफ़ बिल्लाहि फ़ाज़िरन व इज़ा कील लहू बअद ज़ालिक इलहफ़ बिशैख़िफ़ व मुअतकदिकल्वलियल्फ़ुलानी तल्अषिमु व तल्कउ व अ बा वअतरफ बिल्हक़्क़ि व हाज़ा मिन अब्यनिल्अदिल्लतिद्दाल्लति अ़ला अन्न शिर्कहुम क़द बलग़ फौक शिर्किम्मन क़ाल अन्नहू तआला षानियष्नैनि औ षालिषु षलाषतिन फ या उलमाअद्दीनि व या मुलूकल्मुस्लिमीन अय्यु रजदूनलिल्इस्लामि अशद्दु मिनल्कुफ़्रि व अय्यु बलाइन लिहाज़द्दीनि अज़रू अ़लैहि मिन इबादिही गैरल्लाहि व अय्यु मुसीबतिन युसाबु बिहल्मुस्लिमून तअदिलु हाज़िहिल्मुसीबत व अय्यु मन्करिन इन्कारहू इन लम यकुन इन्कार हाज़शिर्किल्बय्यिन वाजिबन

लक़द अस्मअत लौ नादैत हय्यन — व ला किन ला हयात लिमन तुनादी
व लौ नारन नफ़ख़त बिहा अजाअत — व ला किन अन्त तन्फ़ख़ु फ़िरिमादि

उसमें कोई क़बाहत नहीं है।

आपके अख़्लाक़े ह़स्ना में से है कि आप बीमारी के दिनों में दूसरी बीवियों से ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में जाने के लिये मअ़ज़रत फ़र्माते रहे। यहाँ तक कि तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात ने आपको हुज्र-ए-आइशा (रज़ि.) के लिये इजाज़त दे दी और आख़िरी वक़्त में आपने वहीं बसर किये। इससे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की भी कमाले फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है। तुफ़ (अफ़सोस) है उन नामो–निहाद मुसलमानों पर जो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) जैसी माय-ए-नाज़ इस्लामी ख़ातून की फ़ज़ीलत का इंकार करते हैं। अल्लाह तआ़ला उनको हिदायत अ़ता करे।

١٣٩٠ – حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلَالٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)). لَوْ لَا ذَلِكَ أُبْرِزَ قَبْرُهُ، غَيْرَ أَنَّهُ خَشِيَ – أَوْ خُشِيَ – أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا)). وَعَنْ هِلَالٍ قَالَ: كَنَّانِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَلَمْ يُولَدْ لِي. [راجع: ٤٣٥]

1390. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन हुमैद ने, उनसे उ़र्वा और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर फ़र्माया था, जिससे आप जाँबर (तंदुरुस्त) न हो सके थे कि अल्लाह तआ़ला की यहूदो-नस़ारा पर ला'नत हो, उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मसाजिद बना लिया। अगर ये डर न होता तो आपकी क़ब्र खुली रहने दी जाती। लेकिन डर इसका है कि कहीं उसे भी लोग सज्दागाह न बना लें। और हिलाल से रिवायत है कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने मेरी कुन्नियत (अबू अ़वाना या अ़वाना के वालिद) रख दी थी, वर्ना मेरी कोई औलाद न थी। (राजेअ़ : 435)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُوبَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ سُفْيَانَ التَّمَّارِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ رَأَى قَبْرَ النَّبِيِّ ﷺ مُسَنَّمًا.

हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि हमें अबूबक्र बिन अयास ने ख़बर दी, उनसे सुफ़यान तम्मार ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की क़ब्रे-मुबारक देखी जो कोहान-नुमा थी

حَدَّثَنَا فَرْوَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا سَقَطَ عَلَيْهِمُ الْحَائِطُ فِي زَمَانِ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَخَذُوا فِي بِنَائِهِ، فَبَدَتْ لَهُمْ قَدَمٌ، فَفَزِعُوا وَظَنُّوا أَنَّهَا قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ. فَمَا وَجَدُوا أَحَدًا يَعْلَمُ ذَلِكَ حَتَّى قَالَ لَهُمْ عُرْوَةُ : لَا وَاللهِ، مَا هِيَ قَدَمُ النَّبِيِّ ﷺ، مَا هِيَ إِلَّا قَدَمُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

हमसे फ़र्वा बिन अबी मुग़ीरा ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने कि वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के अ़हदे हुकूमत में (जब नबी करीम ﷺ के हुज्रे मुबारक की) दीवार गिरी और लोग उसे (ज़्यादा ऊँची) उठाने लगे तो वहाँ एक क़दम ज़ाहिर हुआ। लोग ये समझकर घबरा गये कि ये नबी करीम (ﷺ) का क़दम मुबारक है। कोई शख़्स़ ऐसा नहीं था जो क़दम को पहचान सकता। आख़िर उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बताया कि नहीं अल्लाह गवाह है ये रसूलुल्लाह का क़दम नहीं बल्कि ये तो उ़मर (रज़ि.) का क़दम है।

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ अहद करके आता था, उस ख़तरे की वजह से कि कहीं वो फ़ित्ना में न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की नियत का ष़वाब बाक़ी है। (राजेअ : 3080)

إِلَى اللهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ، وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

[راجع: ٣٠٨٠]

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअद रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़्ज़बू नबिय्यका व अख़रजूहू मिन क़ुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ : 463)

٣٩٠١- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيكَ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ٤٦٣]

हज़रत सअद को ये गुमान हुआ कि जंगे अहज़ाब में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की पूरी ताक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब क़ुरैश में लड़ने की ताक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उम्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वह्य आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरत की हालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

٣٩٠٢- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَرْبَعِينَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِينَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ)).

3903. मुझसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह

٣٩٠٣- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

रसूले करीम (ﷺ) ने एक घाटी पर मुक़र्रर फ़र्माकर सख़्त ताकीद फ़र्माई थी कि हमारी जीत हो या हार हमारा हुक्म आए बग़ैर तुम उस घाटी से मत हटना, मगर उन्होंने नाफ़र्मानी की और मुसलमानों की अव्वल मरहले पर फ़तह देखकर वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़्याल से घाटी को छोड़कर मैदान में आ गये। इस नाफ़र्मानी का जो ख़ामियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा वो मा'लूम है। अल्लाह ने बतला दिया कि नाफ़र्मानी और मअ़सियत के इर्तिकाब का नतीजा ऐसा ही होता है और इन हिक्मतों में से एक हिक्मत ये भी है कि अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर है कि रसूलों को आज़माया जाता है और आख़िर अंजाम भी उन ही की फ़तह होती है जैसा कि हिरक़्ल और अबू सुफ़यान के क़िस्से में गुज़र चुका है। अगर हमेशा रसूलों के लिये मदद ही होती रहे तो मोमिनों में ग़ैर मोमिन भी दाख़िल हो सकते हैं और स़ादिक़ और काज़िब लोगों में तमीज़ उठ सकती है और अगर वो हमेशा हारते ही रहें तो बिअ़षत का मक़्सूद फ़ौत हो जाता है।

पस हिक्मते इलाही का तक़ाज़ा फ़तह व शिकस्त हर दौर के दरम्यान हुआ ताकि स़ादिक़ और काज़िब में फ़र्क़ होता रहे। मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ पहले मुसलमानों पर मख़्फ़ी (छुपा हुआ) था। इस इम्तिहान ने उनको ज़ाहिर कर दिया और उन्होंने अपने क़ौल और अ़मल से खुले तौर पर अपने निफ़ाक़ को ज़ाहिर कर दिया। तब मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया कि उनके घरों ही में उनके दुश्मन छुपे हुए हैं जिनसे परहेज़ करना लाज़िम है। आजकल भी ऐसे नामो निहाद मुसलमान मौजूद हैं जो नमाज़ व रोज़ा करते हैं मगर वक़्त आने पर इस्लाम और मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करते रहते हैं। ऐसे लोगों से हर वक़्त चौकन्ना रहना ज़रूरी है। निफ़ाक़ बहुत ही बुरा मर्ज़ है। जिसकी मज़म्मत क़ुर्आन मजीद में कई जगह बड़े ज़ोरदार लफ़्ज़ों में हुई है और उनके लिये दोज़ख़ का सबसे नीचे वाला हिस़्स़ा **वैल** सज़ा के लिये तज्वीज़ होना बतलाया है। हर मुसलमान को पाँचों वक़्त ये दुआ़ पढ़नी चाहिये **अल्लाहुम्म अऊ़ज़ुबिक मिनन्निफ़ाक़ि वशिक़ाक़ि व सूइल्अख़लाक़ि**, ऐ अल्लाह! मैं निफ़ाक़ से और आपस की फूट से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

٤٠٤١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: ((هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ عَلَيْهِ أَدَاةُ الْحَرْبِ)). [راجع: ٣٩٩٥]

4041. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर फ़र्माया, ये हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) हैं, हथियारबन्द, अपने घोड़े की लगाम थामे हुए। (राजेअ : 3995)

٤٠٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

4042. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अ़दी ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवा ने, उन्हें यज़ीद बिन हबीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज़्व-ए-उहुद के शुह्दा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़्सत हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात हौज़े (कौषर) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से हौज़ (कौषर) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

4042. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अ़दी ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवा ने, उन्हें यज़ीद बिन हबीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज़्व-ए-उहुद के शुह्दा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़्सत हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात हौज़े (कौष़र) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से हौज़ (कौष़र) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

٤٠٤٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

उसका कोई ख़तरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो। उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आख़िरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ़ : 1344)

وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوهَا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[راجع: ١٣٤٤]

तश्रीह : उहुद की लड़ाई 3 हिजरी शव्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये रावी का ये कहना कि आठ बरस बाद स़ह़ीह़ नहीं हो सकता। मत़लब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुख़्सत करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी साल का है और मुर्दों का विदाअ़ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। **हाफ़िज़ स़ाह़ब ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़रवी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती।** रिवायत में हौज़े कौष़र पर शर्फ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शर्फ़े मुलाक़ात ह़ासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। क़ुर्आन व ह़दीष़ फैलाओ। जो लोग ह़दीष़ शरीफ़ और ह़दीष़ वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौष़र पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआ़ला हम सबको हौजे कौष़र पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाक़ात नसीब फ़र्माए, आमीन।

उसका कोई ख़तरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो। उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आख़िरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ : 1344)

وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوهَا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[راجع: ١٣٤٤]

तशरीह : उहुद की लड़ाई 3 हिजरी शव्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये रावी का ये कहना कि आठ बरस बाद सहीह नहीं हो सकता। मतलब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुख़्सत करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके हयाते तय्यिबा के आख़िरी साल का है और मुर्दों का विदाअ़ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। **हाफ़िज़ साहब ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़रवी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती।** रिवायत में हौज़े कौषर पर शर्फ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शर्फ़े मुलाक़ात हासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। क़ुर्आन व हदीष फैलाओ। जो लोग हदीष शरीफ़ और हदीष वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौषर पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआला हम सबको हौजे कौषर पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाक़ात नसीब फ़र्माए, आमीन।

4043. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे इब्ने इस्हाक़ (अ़म्र बिन उबैदुल्लाह सबीई) ने और उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहुद के मौक़े पर जब मुश्रिकीन से मुक़ाबला के लिये हम पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातहती में (पहाड़ी पर) मुक़र्रर फ़र्माया था और उन्हें ये हुक्म दिया था कि तुम अपनी जगह से न हटना, उस वक़्त भी जब तुम लोग देख लो कि हम उन पर ग़ालिब आ गये हैं, फिर भी यहाँ से न हटना और उस वक़्त भी जब तुम देख लो कि वो हम पर ग़ालिब आ गये, तुम लोग हमारी मदद के लिये न आना। फिर जब हमारी मुठभेड़ कुफ़्फ़ार से हुई तो उनमें भगदड़ मच गई। मैंने देखा कि उनकी औरतें पहाड़ियों पर बड़ी तेज़ी के साथ भागी जा रही थीं, पिण्डलियों से ऊपर कपड़े उठाए हुए, जिससे उनके पाज़ेब दिखाई दे रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के (तीरंदाज़) साथी कहने लगे कि ग़नीमत ग़नीमत। इस पर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ताकीद की थी कि अपनी जगह से न हटना (इसलिये तुम लोग ग़नीमत का माल लूटने न जाओ)

٤٠٤٣ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَقِينَا الْمُشْرِكِينَ يَوْمَئِذٍ وَأَجْلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا مِنَ الرُّمَاةِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللهِ وَقَالَ: ((لاَ تَبْرَحُوا إِنْ رَأَيْتُمُونَا ظَهَرْنَا عَلَيْهِمْ فَلاَ تَبْرَحُوا وَإِنْ رَأَيْتُمُوهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْنَا فَلاَ تُعِينُونَا)) فَلَمَّا لَقِينَا هَرَبُوا حَتَّى رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ فِي الْجَبَلِ رَفَعْنَ عَنْ سُوقِهِنَّ قَدْ بَدَتْ خَلاَخِلُهُنَّ فَأَخَذُوا يَقُولُونَ: الْغَنِيمَةَ الْغَنِيمَةَ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جُبَيْرٍ: عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لاَ تَبْرَحُوا فَأَبَوْا فَلَمَّا أَبَوْا صُرِفَ وُجُوهُهُمْ فَأُصِيبَ سَبْعُونَ قَتِيلاً

सको। कुछ लोगों ने उसके खिलाफ़ दूसरी राय पर इसरार किया। जब शोरो–गुल और झगड़ा ज़्यादा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ से जाओ। उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते थे कि मुसीबत सबसे बड़ी ये थी कि लोगों ने इख़्तिलाफ़ और शोर करके आँहज़रत (ﷺ) को वो हिदायत नहीं लिखने दी।

(राजेअ: 114)

مَنْ يَقُولُ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغْوَ وَالاخْتِلاَفَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا)). قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَكَانَ يَقُولُ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ لاخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह: ये रहलत से चार दिन पहले की बात है। जब मर्ज ने शिद्दत इख़्तियार की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लाओ तुम्हें कुछ लिख दूँ ताकि तुम मेरे बाद गुमराह न हो। कुछ ने कहा कि आप पर शिद्दते दर्द ग़ालिब है, क़ुर्आन हमारे पास मौजूद है और हमको काफ़ी है। इस पर आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। कोई कहता था सामाने किताबत ले आओ कि ऐसा नविश्ता लिखा जाए कोई कुछ और कहता था ये शोरो-शग़फ़ बढ़ा तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सब उठ जाओ। ये जुम्अेरात का वाक़िया है। उसी रोज़ आपने तीन वसिय्यतें फ़र्माईं। यहूद को अरब से निकाल दिया जाए। वफ़ूद की इज़्ज़त हमेशा उसी तरह की जाए जैसा मैं करता रहा हूँ। क़ुर्आन मजीद को हर काम में मा'मूल बनाया जाए। कुछ रिवायात के मुताबिक़ किताबुल्लाह और सुन्नत पर तमस्सुक का हुक्म फ़र्माया। आज मग़्रिब तक की तमाम नमाज़ें हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद पढ़ाई थीं मगर इशा में न जा सके और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़र्माया कि वो नमाज़ पढ़ाएँ। जिसके तहत हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हयाते नबवी में सत्रह नमाज़ों की इमामत फ़र्माई। **रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु** आमीन।

4433, 4434. हमसे बुस्रा बिन सफ़्वान बिन जमील लख़्मी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और आहिस्ता से कोई बात उनसे कही जिस पर वो रोने लगीं, फिर दोबारा आहिस्ता से कोई बात कही जिस पर वो हंसने लगीं। फिर हमने उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि आपकी वफ़ात उसी मर्ज़ में हो जाएगी, मैं ये सुनकर रोने लगी। दूसरी बार आप (ﷺ) ने मुझसे जब सरगोशी की तो ये फ़र्माया कि आपके घर के आदमियों में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी तो मैं हंसी थी।

(राजेअ: 3623, 3624)

٤٤٣٣، ٤٤٣٤ - حَدَّثَنَا بُسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلٍ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَضَحِكَتْ، فَسَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِهِ يَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ. [راجع: ٣٦٢٣، ٣٦٢٤]

4435. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे

٤٤٣٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ

4435. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे

٤٤٣٥- حدثني محمد بن بشار، حدثنا غندر حدثنا شعبة عن سعد، عن عروة

सअद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सुनती आई थी कि हर नबी को वफ़ात से पहले दुनिया और आख़िरत के रहने में इख़्तियार दिया जाता है, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी सुना, आप अपने मर्ज़ुल मौत में फ़र्मा रहे थे, आपकी आवाज़ भारी हो चुकी थी। आप आयत 'मअल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अलैहिम अल्ख़' की तिलावत फ़र्मा रहे थे (या'नी उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया है) मुझे यक़ीन हो गया कि आपको भी इख़्तियार दे दिया गया है।

(दीगर मक़ाम :4436, 4437, 4586, 6337, 6509)

عن عائشة قالت : كنت أسمع أنه لا يموت نبي حتى يخير بين الدنيا والآخرة، فسمعت النبي ﷺ يقول في مرضه الذي مات فيه وأخذته بحة يقول: ﴿مع الذين أنعم الله عليهم﴾ الآية فظننت أنه خير. [أطرافه في : ٤٤٣٦، ٤٤٣٧، ٤٥٨٦، ٦٣٣٨، ٦٥٠٩].

तश्रीह : या'नी आपने आख़िरत को इख़्तियार किया। वाक़दी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने दुनिया में आने पर सबसे पहले जो कलिमा ज़ुबान से निकाला वो अल्लाहु अकबर था और आख़िरी कलिमा जो वफ़ात के वक़्त फ़र्माया, वो अर्रफ़ीक़ुल्आला था। (वहीदी)

सअ़द ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सुनती आई थी कि हर नबी को वफ़ात से पहले दुनिया और आख़िरत के रहने में इख़्तियार दिया जाता है, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी सुना, आप अपने मर्ज़ुल मौत में फ़र्मा रहे थे, आपकी आवाज़ भारी हो चुकी थी। आप आयत 'मअ़ल्लज़ीन अन्अ़मल्लाहु अ़लैहिम अल्ख़' की तिलावत फ़र्मा रहे थे (या'नी उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है) मुझे यक़ीन हो गया कि आपको भी इख़्तियार दे दिया गया है। (दीगर मक़ाम : 4436, 4437, 4586, 6337, 6509)

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لاَ يُموتُ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ يَقُولُ: ﴿مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ﴾ الآيَةَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [أطرافه في : ٤٤٣٦، ٤٤٣٧، ٤٥٨٦، ٦٣٣٨، ٦٥٠٩].

तश्रीह : या'नी आपने आख़िरत को इख़्तियार किया। वाक़दी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने दुनिया में आने पर सबसे पहले जो कलिमा ज़ुबान से निकाला वो अल्लाहु अकबर था और आख़िरी कलिमा जो वफ़ात के वक़्त फ़र्माया, वो अर्रफ़ीक़ुल्आला था। (वहीदी)

4436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में बार बार फ़र्माते थे। (अल्लाहुम्म) अर्रफ़ीक़ुल आ़ला, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रुफ़्क़ाअ (अंबिया और सिद्दीक़ीन) में पहुँचा दे (जो आला इल्लियीन में रहते हैं) (राजेअ : 4435)

٤٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا مَرِضَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَرَضَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ جَعَلَ يَقُولُ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)).

[راجع: ٤٤٣٥]

4437. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया तन्दरुस्ती के ज़माने में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि जब भी किसी नबी की रूह क़ब्ज़ की गई तो पहले जन्नत में उसकी क़यामगाह उसे ज़रूर दिखा दी गई, फिर उसे इख़्तियार दिया गया (रावी को शक था कि लफ़्ज़ यह्या है या युख़य्यिरु, दोनों का मफ़्हूम एक ही है) फिर जब आँहज़रत (ﷺ) बीमार पड़े और वक़्त क़रीब आ गया तो सरे मुबारक आ़इशा (रज़ि.) की रान पर था और आप पर ग़शी त़ारी हो गई थी, जब कुछ होश हुआ तो आपकी आँखे घर की छत की त़रफ़ उठ गईं और आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्म फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला। मैं समझ गई कि अब ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमें (या'नी दुनियवी ज़िन्दगी को) पसन्द नहीं फ़र्माएँगे। मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आपने तन्दुरुस्ती के ज़माने में फ़र्माई थी। (राजेअ : 4435)

٤٤٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَحِيحٌ يَقُولُ ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُحَيَّا أَوْ يُخَيَّرَ)) فَلَمَّا اشْتَكَى وَحَضَرَهُ الْقَبْضُ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِ عَائِشَةَ غُشِيَ عَلَيْهِ فَلَمَّا أَفَاقَ شَخَصَ بَصَرُهُ نَحْوَ سَقْفِ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يُجَاوِرُنَا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ حَدِيثُهُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ. [راجع: ٤٤٣٥]

4438. हमसे मुह़म्मद बिन यह्या ज़ह्ली ने बयान किया, कहा

٤٤٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَفَّانُ عَنْ

फ़र्मा गये और आपका हाथ झुक गया। (राजेअ : 890)

4450. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) पूछते रहते थे कि कल मेरा क़याम कहाँ होगा, कल मेरा क़याम कहाँ होगा? आप आइशा (रज़ि.) की बारी के मुंतज़िर थे, फिर अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) के घर क़याम की इजाज़त दे दी और आपकी वफ़ात उन्हीं के घर में हुई। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपकी वफ़ात उसी दिन हुई जिस दिन क़ायदे के मुताबिक़ मेरे यहाँ आपके क़याम की बारी थी। रहलत के वक़्त सरे मुबारक मेरे सीने पर था और मेरा थूक आपके थूक के साथ मिला था। उन्होंने बयान किया कि अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) दाख़िल हुए और उनके हाथ में इस्ते'माल के क़ाबिल मिस्वाक थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैंने कहा कि अब्दुर्रहमान! ये मिस्वाक मुझे दे दो। उन्होंने मिस्वाक मुझे दे दी। मैंने उसे अच्छी तरह चबाया और झाड़कर हुज़ूर (ﷺ) को दी, फिर आपने वो मिस्वाक की, उस वक़्त आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। (राजेअ : 890)

٤٤٥٠- حدَّثنا إسْماعيلُ. قال: حدَّثني سُلَيمانُ بْنُ بِلاَلٍ. حدَّثنا هشامُ بْنُ عُرْوَة. أخْبرني أبي عنْ عائشة رَضي الله عنها أنّ رسُولَ الله ﷺ كان يسْألُ في مرضه الّذي مات فيه يقُولُ: ((أين أنا غداً؟)) يُريدُ يوْم عائشة فأذن لهُ أزْواجُهُ يكُونُ حيْثُ شاءَ فكان في بيْت عائشة حتى مات عنْدها. قالتْ عائشة : فمات في اليَوْم الّذي كان يدُورُ عليّ فيه في بيْتي فقبضهُ الله، وإنّ رأسهُ لبيْن نحْري وسحْري وخالط ريقُهُ ريقي. ثُمّ قالتْ: دخل عبْدُ الرّحْمن بن أبي بكْر ومعهُ سواكٌ يسْتنّ به، فنظر إليْه رسُولُ الله ﷺ فقُلْتُ لهُ: أعْطني هذا السّواك يا عبْد الرّحْمن فأعْطانيه. فقضمْتُهُ ثمّ مضغْتُهُ فأعْطيْتُهُ رسُولَ الله ﷺ فاستنّ به وهُوَ مُسْتنِدٌ إلى صدْري. [راجع: ٨٩٠]

4451. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आप बीमार पड़े तो हम आपकी सेहत के लिये दुआएँ किया करते थे। उस बीमारी में भी मैं आपके लिये दुआ करने लगी लेकिन आप फ़र्मा रहे थे और आप (ﷺ) का सर आसमान की तरफ़ उठा हुआ था फ़िर्रफ़ीक़िल आला फ़िर्रफ़ीक़िल आला और अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) आए तो उनके हाथ में एक ताज़ा टहनी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैं समझ गई कि आप (ﷺ) मिस्वाक करना चाहते हैं। चुनाँचे वो

٤٤٥١- حدَّثنا سُلَيْمانُ بْنُ حَرْبٍ، حدَّثنا حَمّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أيّوب عن ابْن أبي مُلَيْكة، عَنْ عائشة رَضِي الله عَنْهَا قالتْ : تُوفّي النّبيُّ ﷺ في بيْتي وفي يوْمي وبيْن سَحْري ونحْري، وكانتْ إحْدانا تُعوّذُهُ بدُعاء إذا مرض، فذهبْتُ أُعوّذُهُ فرفع رأْسهُ إلى السّماء وقال: ((في الرّفيق الأعْلى. في الرّفيق الأعْلى)) ومرّ عبْدُ الرّحْمن بْنُ أبي بكْرٍ وفي يده جريدةٌ رطْبةٌ فنظر إليْه النّبيُّ

4451. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आप बीमार पड़े तो हम आपकी स़ेह़त के लिये दुआएँ किया करते थे। उस बीमारी में भी मैं आपके लिये दुआ करने लगी लेकिन आप फ़र्मा रहे थे और आप (ﷺ) का सर आसमान की त़रफ़ उठा हुआ था फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) आए तो उनके हाथ में एक ताज़ा टहनी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी त़रफ़ देखा तो मैं समझ गई कि आप (ﷺ) मिस्वाक करना चाहते हैं। चुनाँचे वो

٤٤٥١- حدَّثنا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حدَّثنا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوب عن ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِي وفِي يَوْمِي وبَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي، وَكَانَتْ إِحْدانا تُعَوِّذُهُ بدُعاءٍ إذا مرِضَ. فذهَبْتُ أُعَوِّذُهُ فَرَفَعَ رَأْسَهُ إلى السَّماءِ وَقالَ وقال: ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى. فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) ومرَّ عَبْدُ الرَّحْمنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَفِي يَدِهِ جَرِيدَةٌ رَطْبَةٌ فَنظَرَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ

टहनी मैंने उनसे ले ली। पहले मैंने उसे चबाया, फिर स़ाफ़ करके आपको दे दी। हुज़ूर (ﷺ) ने उससे मिस्वाक की, जिस त़रह पहले आप मिस्वाक किया करते थे, उससे भी अच्छी त़रह से, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वो मिस्वाक मुझे इनायत की और आपका हाथ झुक गया, या (रावी ने ये बयान किया कि) मिस्वाक आपके हाथ से छूट गई। इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के थूक को उस दिन जमा कर दिया जो आपकी दुनिया की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी और आख़िरत की ज़िन्दगी का सबसे पहला दिन था। (राजेअ : 890)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ بِهَا حَاجَةً. فَأَخَذْتُهَا فَمَضَغْتُ رَأْسَهَا وَنَفَضْتُهَا، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهِ فَاسْتَنَّ بِهَا كَأَحْسَنِ ما كَانَ مُسْتَنًّا، ثُمَّ نَاوَلَنِيهَا فَسَقَطَتْ يَدُهُ أَوْ سَقَطَتْ مِنْ يَدِهِ فَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ، فِي آخِرِ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ.

[راجع: ٨٩٠]

टहनी मैंने उनसे ले ली। पहले मैंने उसे चबाया, फिर साफ़ करके आपको दे दी। हुज़ूर (ﷺ) ने उससे मिस्वाक की, जिस तरह पहले आप मिस्वाक किया करते थे, उससे भी अच्छी तरह से, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वो मिस्वाक मुझे इनायत की और आपका हाथ झुक गया, या (रावी ने ये बयान किया कि) मिस्वाक आपके हाथ से छूट गई। इस तरह अल्लाह तआला ने मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के थूक को उस दिन जमा कर दिया जो आपकी दुनिया की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी और आख़िरत की ज़िन्दगी का सबसे पहला दिन था। (राजेअ़ : 890)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ بِهَا حَاجَةً. فَأَخَذْتُهَا فَمَضَغْتُ رَأْسَهَا وَنَفَضْتُهَا، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهِ فَاسْتَنَّ بِهَا كَأَحْسَنِ مَا كَانَ مُسْتَنًّا، ثُمَّ نَاوَلَنِيهَا فَسَقَطَتْ يَدُهُ أَوْ سَقَطَتْ مِنْ يَدِهِ فَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ، فِي آخِرِ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ.
[راجع: ٨٩٠]

4452,4453. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपनी क़यामगाह, मस्ख़ से घोड़े पर आए और आकर उतरे, फिर मस्जिद के अंदर गये। किसी से आपने कोई बात नहीं की। उसके बाद आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में आए और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ गये, नअशे मुबारक एक यमनी चादर से ढंकी हुई थी। आपने चेहरा खोला और झुककर चेहर-ए-मुबारक को बोसा दिया और रोने लगे, फिर कहा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला आप पर दो मर्तबा मौत तारी नहीं करेगा। जो एक मौत आपके मुक़द्दर में थी, वो आप पर तारी हो चुकी है। (राजेअ़ : 1241, 1242)

٤٤٥٣،٤٤٥٢ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَقْبَلَ عَلَى فَرَسٍ مِنْ مَسْكَنِهِ بِالسُّنْحِ حَتَّى نَزَلَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمْ يُكَلِّمِ النَّاسَ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَتَيَمَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُغَشًّى بِثَوْبِ حِبَرَةٍ، فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ ثُمَّ أَكَبَّ عَلَيْهِ فَقَبَّلَهُ وَبَكَى، ثُمَّ قَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، وَاللهِ لاَ يَجْمَعُ اللهُ عَلَيْكَ مَوْتَتَيْنِ، أَمَّا الْمَوْتَةُ الَّتِي كُتِبَتْ عَلَيْكَ فَقَدْ مُتَّهَا. [راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢]

4454. ज़ुहरी ने बयान किया और उनसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए तो हज़रत उमर (रज़ि.) लोगों से कुछ कह रहे थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, उमर! बैठ जाओ, लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने बैठने से इंकार कर दिया। इतने में लोग हज़रत उमर (रज़ि.) को छोड़कर अबूबक्र (रज़ि.) के पास आ गये और आपने ख़ुत्बा मस्नूना के बाद फ़र्माया, अम्माबअ़द! तुममें जो भी मुहम्मद (ﷺ) की इबादत करता था तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि आपकी वफ़ात हो चुकी है और जो

٤٤٥٤ - قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ. أَنَّ أَبَا بَكْرٍ خَرَجَ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُكَلِّمُ النَّاسَ، فَقَالَ: اجْلِسْ يَا عُمَرُ فَأَبَى عُمَرُ أَنْ يَجْلِسَ، فَأَقْبَلَ النَّاسُ إِلَيْهِ وَتَرَكُوا عُمَرَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَّا بَعْدُ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا ﷺ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ،

को आपने कब वसी बना दिया। (राजेअ : 2741)

[راجع: ٢٧٤١]

4460. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़वल ने बयान किया, उनसे तलहा बिन मुसर्रिफ़ ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने किसी को वसी बनाया था। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने पूछा कि लोगों पर वसिय्यत करना कैसे फ़र्ज़ है या वसिय्यत करने का कैसे हुक्म है? उन्होंने बताया कि आपने किताबुल्लाह के मुताबिक़ अमल करते रहने की वसिय्यत की थी। (राजेअ : 2740)

٤٤٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ : سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَوْصَى النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: لاَ، فَقُلْتُ كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أُمِرُوا بِهَا قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ. [راجع: ٢٧٤٠]

4461. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन हकीम) ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अम्र बिन हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न दिरहम छोड़े थे, न दीनार, न कोई ग़ुलाम न बांदी, सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के जिस पर आप सवार हुआ करते थे और आपका हथियार और कुछ वो ज़मीन जो आप (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में मुजाहिदों और मुसाफ़िरों के लिये वक़्फ़ कर रखी थी। (राजेअ : 2739)

٤٤٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا، وَلاَ عَبْدًا وَلاَ أَمَةً إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ الَّتِي كَانَ يَرْكَبُهَا وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا جَعَلَهَا لاِبْنِ السَّبِيلِ صَدَقَةً. [راجع: ٢٧٣٩]

4462. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि शिद्दते मर्ज़ के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) की बेचैनी बहुत बढ़ गई थी। ह़ज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) ने कहा, आह अब्बाजान को कितनी बेचैनी है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, आज के बाद तुम्हारे अब्बाजान की बेचैनी नहीं रहेगी। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो फ़ातिमा (रज़ि.) कहती थीं, हाय अब्बाजान! आप अपने रब के बुलावे पर चले गये, हाए अब्बाजान! आप जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुक़ाम पर चले गये। हम ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को आपकी वफ़ात की ख़बर सुनाते हैं। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) दफ़न कर दिये गये तो आप (रज़ि.) ने अनस (रज़ि.) से कहा, अनस! तुम्हारे दिल रसूलुल्लाह (ﷺ) की नअश पर मिट्टी डालने के लिये किस तरह आमादा हो गये थे।

٤٤٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: وَاكَرْبَ أَبَاهُ فَقَالَ لَهَا: ((لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَلَمَّا مَاتَ قَالَتْ: يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ : يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ.

बाब 85 : नबी करीम (ﷺ) का आख़िरी कलिमा जो ज़ुबाने मुबारक से निकला

٨٥- باب آخِرِ مَا تَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ

हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने कई अहले इल्म की मौजूदगी में ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ह़ालते स़ेहत में फ़र्माया करते थे कि हर नबी की रूह क़ब्ज़ करने से पहले उन्हें जन्नत में उनकी क़यामगाह दिखाई गई, फिर इख़्तियार दिया गया, फिर जब आप (ﷺ) बीमार हुए और आपका सरे मुबारक मेरी रान पर था। उस वक़्त आप पर ग़शी त़ारी हो गई। जब होश मे आए तो आपने अपनी नज़र घर की छत की त़रफ़ उठा ली और फ़र्माया, अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला (ऐ अल्लाह! मुझे अपनी बारगाह में अंबिया और स़िद्दीक़ीन से मिला दे) मैं उसी वक़्त समझ गई कि अब आप हमें पसन्द नहीं कर सकते और मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आप ह़ालते स़ेहत में हमसे बयान किया करते थे। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िरी कलिमा जो ज़ुबान मुबारक से निकला वो यही था कि अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला। (राजेअ़ : 4435)

٤٤٦٣- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ يُونُسُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ، أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُخَيَّرُ)) فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ. ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى سَقْفِ الْبَيْتِ، ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يَخْتَارُنَا وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ. قَالَتْ: فَكَانَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)).

[راجع: ٤٤٣٥]

तश्रीह : नज़्आ की ह़ालत में ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) आप (ﷺ) को सहारा दिये हुए पसे पुश्त बैठी हुई थीं। पानी का प्याला हुज़ूर (ﷺ) के सिराहने रखा हुआ था। आप प्याला में हाथ डालते और चेहरा पर फेर लेते थे। चेहरा मुबारक कभी सुर्ख़ होता कभी ज़र्द पड़ जाता, ज़ुबाने मुबारक से फ़र्मा रहे थे **ला इलाह इल्लल्लाहु अन्न लिल्मौति सकरात** इतने में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) हाथ में ताज़ा मिस्वाक लिये हुए आ गये। आप (ﷺ) ने मिस्वाक पर नज़र डाली तो ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने मिस्वाक को अपने दांतों से नरम करके पेश कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने मिस्वाक की फिर हाथ को बुलन्द फ़र्माया और ज़ुबाने अक़्दस से फ़र्माया **अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़िल्आला** उस वक़्त हाथ लटक गया और पुतली ऊपर को उठ गई। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 86 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٦- باب وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

4464,65. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (बेअ़ष़त के बाद) मक्का में दस साल तक क़याम किया जिसमें आप (ﷺ) पर वह़्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी

٤٤٦٤، ٤٤٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِثَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا.

बाब 86 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٦- باب وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

4464,65. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रह्मान ने बयान किया, उसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह्मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (बेअ़ष़त के बाद) मक्का में दस साल तक क़याम किया जिसमें आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी

٤٤٦٤. ٤٤٦٥- حدَّثنا أبو نُعيم، حدَّثنا شَيْبانُ عَنْ يَحْيى، عَنْ أَبِي سَلَمةَ، عَنْ عَائِشَةَ وابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ الله عَنْهُمْ أنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِثَ بِمكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ علَيْهِ الْقُرآنُ وبِالْمدِينَةِ عَشْرًا.

दस साल तक आपका क़याम रहा। (दीगर मक़ाम : 4978)

[طرفه في: ٤٩٧٨].

दस साल तक आपका क़याम रहा। (दीगर मक़ाम : 4978)

[طرفه في: ٤٩٧٨].

4466. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी उ़म्र 63 साल थी। इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने भी उसी त़रह़ ख़बर दी थी। (राजेअ़ : 3536)

٤٤٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٥٣٦]

तश्रीह़ : 13 रबीउ़ल अव्वल 11 हिजरी यौमे सोमवार वक़्त चाश्त था कि जिस्मे अत़हर से रूहे़ अनवर ने परवाज़ किया, उस वक़्त उ़म्रे मुबारक 63 साल क़मरी पर चार दिन थी। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 87 :

٨٧- باب

4467. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़त्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह़ एक यहूदी के यहाँ तीस स़ाअ़ जौ के बदले में गिरवी रखी हुई थी। (राजेअ़ : 2067)

٤٤٦٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلاَثِينَ يَعْنِي صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ.

[راجع: ٢٠٦٨]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उस यहूदी का क़र्ज़ अदा करके आपकी ज़िरह छुड़ा ली। उन ह़ालात में अगर ज़रा सी भी अ़क़्ल वाला आदमी ग़ौर करेगा तो स़ाफ़ समझ लेगा कि आप सच्चे पैग़म्बर थे। दुनिया के बादशाहों की त़रह़ एक बादशाह न थे। अगर आप दुनिया के बादशाहों की त़रह़ होते तो लाखों करोड़ों रुपये की जायदाद अपने बच्चों और बीवियों के लिये छोड़ देते।

बाब : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को मर्ज़ुल मौत में एक मुहिम पर रवाना करना

٨٨- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي مَرَضِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ

4468. हमसे अबू आ़सिम ज़िह़ाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को एक लश्कर का अमीर

٤٤٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنِ الْفُضَيْلِ بْنِ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ، اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ أُسَامَةَ فَقَالُوا فِيهِ: فَقَالَ

तनाज़अतुम फ़ी शैइन फरुद्दूहू इलल्लाहि वर्रसूलि इन्कुन्तुम तूमिनून बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ज़ालिक ख़ैरुव्व अहसनु तावीला (अन् निसा : 59) या'नी अगर तुममें आपस में कोई इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो इस मसले को अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ लौटा दो, अगर अल्लाह और पिछले दिन पर तुम ईमान रखते हो, उसी में ख़ैर है और फ़ैसले के लिहाज़ से यही तरीक़ा बेहतर है। इस आयत से मुक़ल्लिदीन ने तक़्लीदे शख़्सी का वुजूब षाबित किया है लेकिन दरहक़ीक़त उसमें तक़्लीदे शख़्सी की तर्दीद है जबकि इख़्तिलाफ़ के वक़्त अल्लाह व रसूल की तरफ़ रुजूअ करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह की तरफ़ से मुराद कुर्आन मजीद है और रसूल की तरफ़ रुजूअ से मुराद हदीष शरीफ़ है। किसी भी इख़्तिलाफ़ के वक़्त कुर्आन व हदीष से फ़ैसला होगा जिसके आगे न किसी हाकिम की बात चलेगी न किसी इमाम की। सिर्फ़ कुर्आन व हदीष को हाकिमे मुत्लक़ माना जाएगा। अइम्म-ए-मुज्तहिदीन की भी यही हिदायत है अल्लाह तआला जामिद मुक़ल्लिदों को नेक समझ अता करे, आमीन।

4584. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हज्जाज बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने जुरैज ने, उन्हें यअला बिन मुस्लिम ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, अल्लाह की इत़ाअत करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से हाकिमों की। अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा बिन क़ैस बिन अदी (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें एक मुहिम पर बतौरे अफ़सर रवाना किया था।

٤٥٨٤- حدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضلِ، أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ. عَنْ يَعْلَى بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ قَالَ: نَزَلَتْ فِي عَبْدِ اللهِ بْنِ حُذَافَةَ بْنِ قَيْسِ بْنِ عَدِيٍّ، إِذْ بَعَثَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي سَرِيَّةٍ.

तश्रीह : रास्ते में उनको किसी बात पर गुस्सा आ गया, उन्होंने अपने लोगों से कहा आग सुलगाओ, जब आग रोशन हुई तो कहा उसमें कूद जाओ। कुछ ने कहा उनकी इत़ाअत करनी चाहिये, कुछ ने कहा कि उनका ये हुक्म शरीअत के ख़िलाफ़ है। इसका मानना ज़रूरी नहीं । आख़िर ये आयत, **फ़इन तनाज़अतुम फ़ी शैइन** (अन् निसा : 59) नाज़िल हुई। हाफ़िज़ ने कहा मतलब ये है कि जब किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हो तो किताबुल्लाह व हदीषे रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ रुजूअ करो इससे तक़्लीदे शख़्सी की जड़ कट गई।

बाब 12 : आयत 'फला व रब्बिक ला यूमिनून हत्ता युहक्किमूक' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله ﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾

तेरे रब की क़सम! ये लोग हर्गिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक ये लो उस झगड़े में जो उनके आपस में हों, तुझको अपना हाकिम न बना लें, फिर तेरे फ़ैसले को ब रज़ा व रग़बत के साथ तस्लीम कर लें।

4585. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का एक अंसारी (षाबित बिन क़ैस रज़ि.) सहाबी से मुक़ामे हर्रह की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन अपने बाग़ को पहले सींचने का हक़ रखता

٤٥٨٥- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ. حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّبَيْرُ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فِي شَرِيجٍ مِنَ الْحَرَّةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اسْقِ

बाब 12 : आयत 'फला व रब्बिक ला यूमिनून हत्ता युहक्किमूक' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله

﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾

तेरे रब की क़सम! ये लोग हर्गिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक ये लो उस झगड़े में जो उनके आपस में हों, तुझको अपना हाकिम न बना लें, फिर तेरे फ़ैसले को ब रज़ा व रग़बत के साथ तस्लीम कर लें।

4585. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का एक अंसारी (षाबित बिन क़ैस रज़ि.) सहाबी से मुक़ामे हर्रह की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन अपने बाग़ को पहले सींचने का हक़ रखता

٤٥٨٥- حدثنا علي بن عبد الله. حدثنا محمد بن جعفر. أخبرنا معمر، عن الزهري عن عروة قال: خاصم الزبير رجلا من الأنصار في شريج من الحرة فقال النبي صلى الله عليه وسلم: ((اسق

है) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ुबैर (रज़ि.) पहले तुम अपना बाग़ सींच लो फिर अपने पड़ौसी को जल्द पानी दे देना। इस पर उस अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! इसलिये कि ये आपके फूफीज़ाद भाई हैं? ये सुनकर आँहुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! अपने बाग़ को सींचो और पानी उस वक़्त तक रोके रखो कि मुँडेर भर जाए, फिर अपने पड़ौसी के लिये उसे छोड़ो। (पहले हुज़ूर ﷺ ने अंसारी के साथ अपने फ़ैसले में रिआयत रखी थी) लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को साफ़ तौर पर उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि अंसारी ने ऐसी बात कही थी कि जिससे आपका ग़ुस्सा होना क़ुदरती था। हज़रत (ﷺ) ने अपने पहले फ़ैसले में दोनों के लिये रिआयत रखी थी। ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़याल है, ये आयात इसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीं। तेरे परवरदिगार की क़सम! कि ये लोग तब तक ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि ये उस झगड़े में जो इनके आपस में हों आपको हाकिम न बना लें और आपके फ़ैसले को खुले दिल के साथ ब रज़ा व रग़बत तस्लीम करने के लिये तैयार न हों। (राजेअ : 2360)

يا زبير ثم أرسل الماء إلى جارك)) فقال الأنصاري: يا رسول الله إن كان ابن عمتك فتلون وجهه ثم قال: ((اسق يا زبير ثم احبس الماء حتى يرجع إلى الجدر. ثم أرسل الماء إلى جارك)) واستوعى النبي صلى الله عليه وسلم للزبير حقه في صريح الحكم حين أحفظه الأنصاري وكان أشار عليهما بأمر لهما فيه سعة قال الزبير: فما أحسب هذه الآيات إلا نزلت في ذلك ﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾.

[راجع: ٢٣٦٠]

तशरीह : इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात की क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माता है कि उन लोगों का ईमान कभी पूरा नहीं होने वाला जब तक ये अपने आपस के झगड़ों में आपको अपना हाकिम न बना लें फिर आपके फ़ैसले को सुनकर ख़ुशी ख़ुशी तस्लीम न कर लें। मोमिन की यही निशानी है कि जिस मसले मे अगर सहीह हदीष मिल जाए बस ख़ुशी ख़ुशी उस पर अ़मल शुरू कर दे। अगर तमाम जहाँ के मौलवी व मुज्तहिद मिलकर उसके ख़िलाफ़ बयान करें तो करते रहें, ज़रा भी दिल में ये ख़याल न लाए कि मुज्तहिदों का मज़हब जो हम छोड़ते हैं अच्छी बात नहीं है, बल्कि दिल में बहुत ख़ुशी और सुरूर पैदा हो कि हक़ तआ़ला ने हदीष शरीफ़ की पैरवी की तौफ़ीक़ दी और कैदानी और क़हिस्तानी के फंदे से नजात दिलवाई। (वहीदी)

زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ. ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) وَاسْتَوْعَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ حِينَ أَحْفَظَهُ الأَنْصَارِيُّ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهِمَا بِأَمْرٍ لَهُمَا فِيهِ سَعَةٌ قَالَ الزُّبَيْرُ: فَمَا أَحْسَبُ هَذِهِ الآيَاتِ إِلاَّ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ ﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[راجع: ٢٣٦٠]

है) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ुबैर (रज़ि.) पहले तुम अपना बाग़ सींच लो फिर अपने पड़ौसी को जल्द पानी दे देना। इस पर उस अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! इसलिये कि ये आपके फूफीज़ाद भाई हैं? ये सुनकर आँहुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! अपने बाग़ को सींचो और पानी उस वक़्त तक रोके रखो कि मुँडेर भर जाए, फिर अपने पड़ौसी के लिये उसे छोड़ो। (पहले हुज़ूर ﷺ ने अंसारी के साथ अपने फ़ैसले में रिआयत रखी थी) लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को साफ़ तौर पर उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि अंसारी ने ऐसी बात कही थी कि जिससे आपका ग़ुस्सा होना क़ुदरती था। हज़रत (ﷺ) ने अपने पहले फ़ैसले में दोनों के लिये रिआयत रखी थी। ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़याल है, ये आयात इसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीं। तेरे परवरदिगार की क़सम! कि ये लोग तब तक ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि ये उस झगड़े में जो इनके आपस में हों आपको हाकिम न बना लें और आपके फ़ैसले को खुले दिल के साथ ब रज़ा व रग़बत तस्लीम करने के लिये तैयार न हों। (राजेअ : 2360)

तश्रीह : इस आयत में अल्लाह तआला अपनी ज़ात की क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माता है कि उन लोगों का ईमान कभी पूरा नहीं होने वाला जब तक ये अपने आपस के झगड़ों में आपको अपना हाकिम न बना लें फिर आपके फ़ैसले को सुनकर ख़ुशी ख़ुशी तस्लीम न कर लें । मोमिन की यही निशानी है कि जिस मसले मे अगर सहीह हदीष मिल जाए बस ख़ुशी ख़ुशी उस पर अमल शुरू कर दे। अगर तमाम जहाँ के मौलवी व मुज्तहिद मिलकर उसके ख़िलाफ़ बयान करें तो करते रहें, ज़रा भी दिल में ये ख़याल न लाए कि मुज्तहिदों का मज़हब जो हम छोड़ते हैं अच्छी बात नहीं है, बल्कि दिल में बहुत ख़ुशी और सुरूर पैदा हो कि हक़ तआला ने हदीष शरीफ़ की पैरवी की तौफ़ीक़ दी और कैदानी और क़हिस्तानी के फंदे से नजात दिलवाई। (वहीदी)

बाब 13 : आयत 'फउलाइक मअल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अलैहिम' की तफ़्सीर या'नी,

١٣ - باب قوله ﴿فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ﴾

तश्रीह : तो ऐसे लोग जिन पर अल्लाह तआला ने (अपना ख़ास) इन्आम किया है। जैसे नबियों और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन, उनके साथ उनका हश्र होगा। ये आयत उस वक़्त उतरी जब एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझको आपसे बेहद मुहब्बत है। घर में रहूँ तो चैन नहीं आता। जब आप (ﷺ) की सूरत आकर देख लेता हूँ तो तसल्ली होती है। अब मुझको ये फ़िक्र है कि आख़िरत में आप तो आला दर्जे पर होंगे मैं अल्लाह जाने कहाँ होऊँगा। आपका जमाले मुबारक वहाँ कैसे देख सकूँगा? उसकी तसल्ली के लिये ये आयत नाज़िल हुई। हुक्म आम है और हर मुहिब्बे रसूल (ﷺ) मुसलमान इस बशारत का मिस्दाक़ है। **जज़ाकल्लाहु मिन्कुम**

4586. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो नबी मर्ज़ुल मौत में बीमार होता है तो उसे दुनिया और आख़िरत का इख़्तियार दिया जाता है। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) की मर्ज़ुल वफ़ात में जब आवाज़ गले में फंसने लगी तो मैंने सुना कि आप फ़र्मा रहे थे। उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है या'नी अंबिया, स़िद्दीक़ीन, शुह्दा और स़ालेह़ीन के साथ, इसलिये मैं समझ गई कि आपको भी इख़्तियार दिया गया है (और आपने अल्लाहुम्म बिर्रफ़ीक़िल आ़ला) कहकर आख़िरत को पसन्द फ़र्माया (ﷺ). (राजेअ़ : 4435)

٤٥٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَا مِنْ نَبِيٍّ يَمْرَضُ إِلاَّ خُيِّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ))، وَكَانَ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ أَخَذَتْهُ بُحَّةٌ شَدِيدَةٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ)) فَعَلِمْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [راجع: ٤٤٣٥]

बाब 14 : आयत 'वमा लकुम ला तुक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद नहीं करते और उन लोगों की मदद के लिये नहीं लड़ते जो कमज़ोर हैं, मर्दों में से और औ़रतों और बच्चों में से,

١٤- بَابُ قَوْلِهِ : ﴿وَمَا لَكُمْ لاَ تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ إِلَى الظَّالِمِينَ أَهْلُهَا﴾ الآيَةَ.

तश्रीह़ : मक्का में जो कमज़ोर लोग क़ैद में रह गये थे उनको आज़ाद कराने की तर्ग़ीब में ये आयत नाज़िल हुई।

4587. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं और मेरी वालिदा मुस्तज़्अफ़ीन (कमज़ोरों) में से थे। (राजेअ़ : 1357)

٤٥٨٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ. قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ : كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِنَ الْمُسْتَضْعَفِينَ. [راجع: ١٣٥٧]

उनकी वालिदा का नाम लुबाबा बिन्ते ह़ारिष़ (रज़ि.) था जो ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन थीं। ये दोनों दिल से मुसलमान हो गये थे मगर मक्का में काफ़िरों के हाथों में फंसे हुए थे, हिजरत नहीं कर सकते थे, उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

4588. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैयका ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)ने आयत 'इल्लल्मुस्तज़्अफ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्वालिदानि' की तिलावत की और फ़र्माया कि मैं और मेरी वालिदा भी उन लोगों में से थीं, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मा'ज़ूर रखा था। और ह़ज़रत

٤٥٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ تَلاَ ﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ﴾ قَالَ : كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِمَّنْ عَذَرَ اللهُ. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَصِرَتْ

तशरीह : सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एह़तियात़ उन्होंने जब देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया, मुसलमानों की राय पर छोड़ा और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़ा कर गये तो वो ऐसे रास्ते चले जिसमें दोनो की पैरवी हो जाती है या'नी कुछ मश्विरा पर छोड़ा कुछ मुक़र्रर कर दिया। उन्होंने छः आदमियों को जो उस वक़्त अफ़ज़ल और आ़ला थे, मुअ़य्यन किया फिर उन छः में से किसी की तअ़य्युन मुसलमानों की राय पर छोड़ दी। गोया दोनों सुन्नतों पर अ़मल किया। दूसरे तक़्वा शिआ़री देखिए कि अ़शरा मुबश्शरा में से सई़द बिन ज़ैद भी ज़िन्दा थे मगर उनका नाम तक न लिया, इस ख़्याल से कि वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ रिश्ता रखते थे। हाय! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की त़रह़ मुसलमानों में कौन बेनफ़्स और आ़दिल और मुंसिफ़ पैदा हुआ है। उनका एक एक काम ऐसा है जो उनकी फ़ज़ीलत पहचानने के लिये काफ़ी है और अफ़सोस है इन अ़क़्ल के अँधों पर जो ऐसे फ़र्दे फ़रीद को जिसका नज़ीर इस्लाम में नहीं हुआ बुरा जानते हैं।

7219. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उ़मर (रज़ि.) का दूसरा ख़ुत्बा सुना जब आप मिम्बर पर बैठे हुए थे, ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के दूसरे दिन का है। उन्होंने कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश थे और कुछ नहीं बोल रहे थे, फिर कहा मुझे उम्मीद थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ज़िन्दा रहेंगे और हमारे कामों की तदबीर व इंतिज़ाम करते रहेंगे। उनका मंशा ये था कि आँह़ज़रत (ﷺ) उन सब लोगों के बाद तक ज़िन्दा रहेंगे तो अगर आज मुह़म्मद (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे सामने नूर (क़ुर्आन) को बाक़ी रखा है जिसके ज़रिये तुम हिदायत ह़ासिल करते रहोगे और अल्लाह ने ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को इससे हिदायत की और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के साथी (जो ग़ारे स़ौर में) दो में से दूसरे हैं, बिला शक वो तुम्हारे उमूरे ख़िलाफ़त केलिये तमाम मुसलमानों में सबसे बेहतर हैं, पस उठो और उनसे बेअ़त करो। एक जमाअ़त उनसे पहले ही सक़ीफ़ा बनी साएदा में बेअ़त कर चुकी थी, फिर आ़म लोगों ने मिम्बर पर बेअ़त की। ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि वो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से, उस दिन कह रहे थे, मिम्बर पर चढ़ आइये। चुनाँचे वो इसका बराबर इस़रार करते रहे, यहाँ तक कि अबूबक्र (रज़ि.) मिम्बर पर चढ़ गये और सब लोगों ने आपसे बेअ़त की।

(दीगर मक़ाम : 7269)

٧٢١٩- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ خُطْبَةَ عُمَرَ الآخِرَةَ حِينَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَذَلِكَ الْغَدَ مِنْ يَوْمِ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فَتَشَهَّدَ وَأَبُو بَكْرٍ صَامِتٌ لاَ يَتَكَلَّمُ قَالَ: كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَعِيشَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى يَدْبُرَنَا، يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَكُونَ آخِرَهُمْ فَإِنْ يَكُ مُحَمَّدٌ ﷺ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ جَعَلَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ نُورًا تَهْتَدُونَ بِهِ، هَدَى اللهُ مُحَمَّدًا ﷺ وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ صَاحِبُ رَسُولِ اللهِ ﷺ ثَانِي اثْنَيْنِ، فَإِنَّهُ أَوْلَى الْمُسْلِمِينَ بِأُمُورِكُمْ فَقُومُوا فَبَايِعُوهُ، وَكَانَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ قَدْ بَايَعُوهُ قَبْلَ ذَلِكَ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الْعَامَّةِ عَلَى الْمِنْبَرِ قَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ لأَبِي بَكْرٍ يَوْمَئِذٍ: اصْعَدِ الْمِنْبَرَ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَبَايَعَهُ النَّاسُ عَامَّةً.[طرفه في : ٧٢٦٩].

तश्रीह : सक़ीफ़ा का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह़.) ने मँडवे से किया है। उ़र्फ़े आ़म में बनू साएदा की चौपाली ठीक है। **कानत मकानु इज्तिमाइहिम लिल्हुकूमाति** या'नी वो पंचायत घर था। इब्ने मुईन ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इस़रार ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को मिम्बर पर चढ़ाने का दुरुस्त था ताकि आपका सबसे तआरुफ़ हो जाए और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तवाज़ोअ़ की बिना पर चढ़ने से इंकार कर रहे थे। आख़िर चढ़ गये और अब बेअ़ते उ़मूमी हुई जबकि सक़ीफ़ा बनू साएदा की बेअ़त ख़ुसूसी थी। बाब की मुनासबत इससे निकली कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) की निस्बत फ़र्माया वो तुम सब में ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तह़िक़ और ज़्यादा लायक़ हैं। शिया कहते हैं कि ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ही के ज़ोर और इस़रार से हुई वरना ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) बिलकुल दुर्वेश स़िफ़त और मुंकसिरुल मिज़ाज और ख़िलाफ़त से मुतनफ़्फ़िर थे। हम कहते हैं अगर ऐसा ही हो जब भी क्या क़बाह़त है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने नज़दीक जिसको ख़िलाफ़त के लायक़ समझा इसके लिये ज़ोर दिया और ह़क़पसंद लोगों का यही क़ायदा होता है। अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ये राय ग़लत़ होती तो दूसरे ह़ज़ारों स़ह़ाबा जो वहाँ मौजूद थे वो क्यूँ इत्तिफ़ाक़ करते? ग़र्ज़ बइज्माअ़ स़ह़ाबा अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ख़िलाफ़त के अहल और क़ाबिल ठहरे।

7220. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक ख़ातून आईं और किसी मामले में आपसे बातचीत की, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि वो दोबारा आपके पास आएँ। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो फिर आप क्या फ़र्माते हैं? जैसे उनका इशारा वफ़ात की त़रफ़ हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास आइयो। (राजेअ़ : 3659)

٧٢٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ كَأَنَّهَا تُرِيدُ الْمَوْتَ قَالَ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). [راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ स़ाफ़ दलील है इस बात की कि आँह़ज़रत (ﷺ) को मा'लूम था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा होंगे। दूसरी रिवायत में जिसे त़बरानी और इस्माईली ने निकाला यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) से एक गंवार ने बेअ़त की, पूछा अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो किसके पास आऊँ? आपने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) के पास आना। पूछा अगर वो भी गुज़र जाएँ? फ़र्माया कि फिर उ़मर (रज़ि.) के पास। तर्तीब ख़िलाफ़त का ये खुला हुआ षुबूत है।

7221. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने क़बाइल बुज़ाख़ा के वफ़द से (जो आँह़ज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद मुर्तद हो गया था और अब मुआ़फ़ी केलिये आया था) फ़र्माया कि ऊँटों की दुमों के पीछे पीछे जंगलों मे घूमते रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन की कोई अम्र बतला दे जिसकी वजह से वो तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दे।

٧٢٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِوَفْدِ بُزَاخَةَ: تَتْبَعُونَ أَذْنَابَ الإِبِلِ حَتَّى يُرِيَ اللهُ خَلِيفَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَالْمُهَاجِرِينَ أَمْرًا يَعْذِرُونَكُمْ بِهِ.

[راجع: ٢٧٥٧]

तश्रीह: हज़रत कअ़ब बिन मालिक ने ग़ज़्व-ए-तबूक़ से बिला इजाज़त ग़ैर हाज़िरी की थी और ये बड़ा भारी मिल्ली जुर्म था जो उनसे स़ादिर हुआ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे और उनके साथियों से पूरा तर्के मवालात फ़र्माया यहाँ तक कि उनकी तौबा अल्लाह ने क़ुबूल की। अब ऐसे मामलात ख़लीफ़ा इस्लाम की स़वाब दीद पर मौक़ूफ़ किये जा सकते हैं।

९५. किताबुत्तमन्ना

किताब नेकतरीन आरज़ुओं के जाइज़ होने में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(तमन्ना उ़र्फ़े आ़म में आदमी का यूँ कहना काश! ऐसा होता, तमन्ना और तरज्जी मे ये फ़र्क़ है कि तमन्ना उस बात में भी होती है जो मह़ाल हो जैसे कहना कि काश! जवानी फिर आ जाती और तरज्जो हमेशा उन ही बातों में होती है जो होने वाली हों)

बाब 1 : आरज़ू करने के बारे में और जिसने शहादत की आरज़ू की

١- باب مَا جَاءَ فِي التَّمَنِّي وَمَنْ تَمَنَّى الشَّهَادَةَ

7226. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर उन लोगों का ख़्याल न होता जो मेरे साथ ग़ज़्वा में शरीक न हो सकने को बुरा जानते हैं मगर अस्बाब की कमी की वजह से वो शरीक नहीं हो सकते और कोई ऐसी चीज़ मेरे पास नहीं है जिस पर उन्हें सवार करूँ तो मैं कभी (ग़ज़्वात में शरीक होने से) पीछे न रहता। मेरी तो ख़्वाहिश है कि अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िंदा किया जाऊँ और फिर मारा जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ انَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لاَ انْ رِجَالاً يَكْرَهُونَ انْ يَتَخَلَّفُوا بَعْدِي وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ، مَا تَخَلَّفْتُ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ)).

[راجع: ٣٦]

ऐसी पाकीज़ा तमन्नाएँ करना बिला शुब्हा जाइज़ है। जैसा कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से ये मन्क़ूल है।

7227. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। मेरी आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जंग करूँ और क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, अबू हुरैरह (रज़ि.) इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराते थे कि मैं अल्लाह का गवाह करके कहता हूँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ وَدِدْتُ أَنِّي أُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأُقْتَلُ ثُمَّ أُحيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا)) فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَقُولُهُنَّ ثَلاَثًا أَشْهَدُ بِاللهِ.

[راجع: ٣٦]

कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। आख़िर में ख़त्ज शहादत पर किया क्योंकि मक़सूद वही थी जो आपको बतला दिया गया था कि अल्लाह आपकी जान की हिफ़ाज़त करेगा जैसा कि फ़र्माया, **वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि** लेकिन ये आरज़ू महज़ फ़ज़ीलते जिहाद के ज़ाहिर करने के लिये आपने फ़र्माई।

बाब 2 : नेक काम जैसे ख़ैरात की आरज़ू करना

٢- باب تَمَنِّي الْخَيْرِ

और नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं उसे भी ख़ैरात कर देता।

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي أُحُدٌ ذَهَبًا)).

7228. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं पसंद करता कि अगर उनके लेने वाले मिल जाएँ तो तीन दिन गुज़रने से पहले ही मेरे पास उसमें से एक दीनार भी न बचे, सिवा उसके जिसे मैं अपने ऊपर क़र्ज़ की अदायगी के लिये रोक लूँ। (राजेअ़ : 2389)

٧٢٢٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عِنْدِي أُحُدٌ ذَهَبًا لأَحْبَبْتُ أَنْ لاَ يَأْتِيَ ثَلاَثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ لَيْسَ شَيْءٌ أَرْصُدُهُ فِي دَيْنٍ عَلَيَّ أَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهُ)).

[راجع: ٢٣٨٩]

तश्रीह : बस अस़ल दुर्वेशी ये है जो आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दी कि कल के लिये कुछ न रख छोड़े, जो रुपया या माल मताअ़ आए वो ग़ुरबा और मुस्तहिक़्क़ीन को फ़ौरन तक़्सीम कर दे। अगर कोई शख़्स ख़ज़ाना अपने लिये जमा करे और तीन दिन से ज़्यादा रुपया पैसा अपने पास रख छोड़े तो उसको दुर्वेश न कहेंगे बल्कि दुनियादार कहेंगे। एक बुज़ुर्ग के पास रुपया आया, उन्होंने पहले चालीसवाँ हिस्सा उसमें से ज़कात का निकाला फिर बाक़ी 39 हिस्से भी तक़्सीम कर दिये और कहने लगे मैंने ज़कात का ष़वाब ह़ासिल करने के लिये पहले चालीसवाँ हिस्सा निकाला अगर सब एक बारगी ख़ैरात कर देता तो उस फ़र्ज़ के ष़वाब से महरूम रहता। हैदराबाद में बहुत से मशाइख़ और दुर्वेश ऐसे नज़र आते हैं कि दुनियादार उनसे बमरातिब बेहतर हैं। अफ़सोस! उनको अपने तईं दुर्वेश कहते हुए शर्म नहीं आती वो तो साहूकारों की तरह माल व

किया, कहा मुझसे मेरे वालिद और चचा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें एक हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर मैं आपको न पाऊँ तो फिर क्या करूँगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ब मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास जाना। हुमैदी ने इब्राहीम बिन सअ़द से ये इज़ाफ़ा किया कि ग़ालिबन ख़ातून की मुराद वफ़ात थी। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा हुमैदी ने इस रिवायत में इब्राहीम बिन सअ़द से इतना बढ़ाया है कि आपको न पाऊँ, इससे मुराद ये है कि आपकी वफ़ात हो जाए। (राजेअ़ : 3659)

إبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي وَعَمِّي قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرٍ أَنَّ أَبَاهُ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ، فَأَمَرَهَا بِأَمْرٍ فَقَالَتْ: أَرَأَيْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إنْ لَمْ أَجِدْكَ قَالَ: ((إنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). زَادَ الْحُمَيْدِيُّ عَنْ إبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ كَأَنَّهَا تَعْنِي الْمَوْتَ.

[راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह़.) दलालत की मिष़ाल के तौर पर लाए कि आँहज़रत (ﷺ) ने औरत के ये कहने से कि मैं आपको न पाऊँ ये समझ लिया कि मुराद इसकी मौत है। कुछ ने कहा इसमें दलालत है अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के ख़लीफ़ा होने की और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया तो इसका मत़लब ये है कि स़राह़त के साथ, बाक़ी इशारे के त़ौर पर तो कई अह़ादीष़ से मा'लूम होता है कि आप अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को ख़लीफ़ा करना चाहते थे। मष़लन ये ह़दीष़ और मर्ज़े मौत में अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म देने की ह़दीष़ और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि) की वो ह़दीष़ कि अपने भाई और बाप को बुला भेज, मैं लिख दूँ, ऐसा न हो कोई आरज़ू करने वाला कुछ और आरज़ू करे और वो ह़दीष़ कि स़ह़ाबा ने आपसे पूछा, हम आपके बाद किसको ख़लीफ़ा करें फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं उ़मर(रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं, अ़ली (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं मगर मुझको उम्मीद नहीं कि तुम अ़ली (रज़ि.) को करोगे। इस ह़दीष़ में भी अबूबक्र (रज़ि.) को पहले बयान किया और शाह वलीउल्लाह स़ाह़ब ने इज़ालतुल ख़ुलफ़ा में इस बह़ष़ को बहुत तफ़्स़ील से बयान किया है।

बाब 25 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि, अहले किताब से दीन की कोई बात न पूछो

٢٥- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَسْأَلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ شَيْءٍ))

7361. अबुल यमान इमाम बुख़ारी (रह़.) के शैख़ ने बयान किया, कि हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हे ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, वो मदीने में क़ुरैश की एक जमाअ़त से ह़दीष़ बयान कर रहे थे। मुआ़विया (रज़ि.) ने कअ़ब अह़बार बहुत सच्चे थे और बावजूद उसके कभी कभी उनकी बात झूठ निकलती थी। ये मत़लब नहीं है कि कअ़ब अह़बार झूठ बोलते थे।

٧٣٦١- وَقَالَ أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يُحَدِّثُ رَهْطًا مِنْ قُرَيْشٍ بِالْمَدِينَةِ، وَذَكَرَ كَعْبَ الأَحْبَارِ فَقَالَ: إنْ كَانَ مِنْ أَصْدَقِ هَؤُلاَءِ الْمُحَدِّثِينَ الَّذِينَ يُحَدِّثُونَ عَنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، وَإِنْ كُنَّا مَعَ ذَلِكَ لَنَبْلُو عَلَيْهِ

हैं कि कनीज़ तो उस ताजिर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं मअन वह ताजिर हाज़िर हुआ और उसने वह कनीज़ मज़ारे अक़्दस की नज़्र की ख़ादिम को इशारा हुआ उन्होंने आपकी नज़्र कर दी इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब अब देर काहे कि फलां हुजरा में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाए किराम की हयाते बरज़ख़िया में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियावी है उन पर तस्दीक़ वादा इलाहिया के लिए महज़ एक आन को मौत तारी होती है फिर फौरन उनको वैसे ही हयात अता फरमा दी जाती है इस हयात पर वही अहकाम दुनयवीया हैं उनका तरका बांटा न जाएगा उनकी अज़्वाज को निकाह हराम नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात पर इद्दत नहीं वह अपनी क़ुबूर में खाते पीते नमाज़ पढ़ते हैं बल्कि सैयदी मुहम्मद बिन अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी फरमाते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की क़ुबूर मुतह्हरा में अज़्वाजे मुतह्हरात पेश की जाती हैं वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो उनको हज करते हुए लब्बैक पुकारते हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा और औलिया उलमा शुहदा की हयाते बरज़ख़िया अगरचे हयाते दुनियवीया से अफ़्ज़ल, आला है मगर उस पर अहकामे दुनयवीया जारी नहीं उनका तरेका तक़्सीम होगा उनकी अज़्वाज इद्दत करेंगी और हयाते बरज़ख़ीया का सुबूत तो अवाम के लिए भी है हदीस में है मिस्ल मोमिन की उस ताइर की तरह जो क़फ़स में है कि जब तक वह क़फ़स में है उसकी उड़ान उसी तक है और जब उस से आज़ाद हुआ तो उसकी उड़ान कितनी होगी बाद मरने के समआ, बसर और इद्राक आम लोगों का, यहां तक कि कुफ़्फ़ार का ज़ाइद हो जाता है और यह तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअत का इज्माई अक़ीदा है और अहादीसे सहीहा से साबित है जो ख़िलाफ़ करे गुमराह है कि जिस किसी की क़ब्र पर आदमी जाता है अगर साहिबे क़ब्र उसको पहचानता था तो उसको पहचानता है और उस से तसल्ली पाता है उसकी आवाज़ बल्कि उसकी पैछल सुनता है और अगर नहीं पहचानता था तो इतना ज़रूर जानता है कि एक मुसलमान मेरी क़ब्र पर आया है

اس کی حفاظت کرتا ہوں اگر اس کا ایک ٹکڑا رسی کا جاتا رہے گا اللہ تعالیٰ مجھ سے سوال کرے گا (پھر فرمایا) ان پر خاص توجہ تھی اور ان کو بھی خاص نیازمندی تھی اسی وجہ سے حضرت کو ان سے خاص محبت تھی حدیث میں ہے جو کوئی دریافت کرنا چاہے کہ اللہ کے یہاں اس کی کس قدر قدر و منزلت ہے وہ یہ دیکھے کہ اس کے دل میں اللہ کی کس قدر قدر و منزلت ہے اتنی ہی اس کی اللہ کے یہاں ہے۔ حضرت سیدی عبدالوہاب اکابر اولیائے کرام میں سے ہیں حضرت سیدی احمد بدوی کبیر کے مزار پر بہت بڑا میلہ اور ہجوم ہوتا تھا اس مجمع میں چلے آتے تھے ایک تاجر کی کنیز پر نگاہ پڑی فوراً نگاہ پھیر لی کہ حدیث میں ارشاد ہوا، اَلنَّظْرَۃُ الْاُوْلٰی لَکَ وَالثَّانِیَۃُ عَلَیْکَ. پہلی نظر تیرے لیے ہے اور دوسری تجھ پر، یعنی پہلی نظر کا کچھ گناہ نہیں اور دوسری کا مواخذہ ہوگا، خیر، نگاہ تو آپ نے پھیر لی مگر وہ آپ کو پسند آئی جب مزار شریف پر حاضر ہوئے ارشاد فرمایا عبدالوہاب وہ کنیز پسند ہے عرض کی ہاں اپنے شیخ سے کوئی بات چھپانا نہ چاہیے ارشاد فرمایا اچھا ہم نے تم کو وہ کنیز ہبہ کی اب آپ سکوت میں ہیں کہ کنیز تو اس تاجر کی ہے اور حضور ہبہ فرماتے ہیں معاً وہ تاجر حاضر ہوا اور اس نے وہ کنیز مزار اقدس کی نظر کی خادم کو اشارہ ہوا، انھوں نے آپ کی نذر کر دی، ارشاد فرمایا، عبد الوہاب اب دیر کاہے کی، فلاں حجرہ میں لے جاؤ اور اپنی حاجت پوری کرو۔

عرض:۔ انبیاء علیہم الصلاۃ والسلام اور اولیائے کرام کی حیات برزخیہ میں کیا فرق ہے؟

ارشاد:۔ انبیائے کرام علیہم الصلاۃ والسلام کی حیات حقیقی حسی دنیاوی ہے ان پر تصدیق وعدۂ الٰہیہ کے لیے محض ایک آن کو موت طاری ہوتی ہے پھر فوراً ان کو ویسے ہی حیات عطا فرما دی جاتی ہے، اس حیات پر وہی احکام دنیویہ ہیں، ان کا ترکہ بانٹا نہ جائے گا، ان کی ازواج کو نکاح حرام، نیز ازواج مطہرات پر عدت نہیں، وہ اپنی قبور میں کھاتے پیتے نماز پڑھتے ہیں، بلکہ سیدی محمد بن عبدالباقی زرقانی فرماتے ہیں کہ انبیا علیہم الصلاۃ والسلام کی قبور مطہرہ میں ازواج مطہرات پیش کی جاتی ہیں، وہ ان کے ساتھ شب باشی فرماتے ہیں، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تو ان کو حج کرتے ہوئے لبیک پکارتے ہوئے

हैं कि कनीज़ तो उस ताजिर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं मअन वह ताजिर हाज़िर हुआ और उसने वह कनीज़ मज़ारे अक़्दस की नज़्र की ख़ादिम को इशारा हुआ उन्होंने आपकी नज़्र कर दी इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब अब देर काहे कि फलां हुजरा में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाए किराम की हयाते बरज़ख़िया में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियावी है उन पर तस्दीक़ वादा इलाहिया के लिए महज़ एक आन को मौत तारी होती है फिर फौरन उनको वैसे ही हयात अता फरमा दी जाती है इस हयात पर वही अहकाम दुनयवीया हैं उनका तरका बांटा न जाएगा उनकी अज़्वाज को निकाह हराम नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात पर इद्दत नहीं वह अपनी कुबूर में खाते पीते नमाज़ पढ़ते हैं बल्कि सैयदी मुहम्मद बिन अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी फरमाते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की कुबूर मुतह्हरा में अज़्वाजे मुतह्हरात पेश की जाती हैं वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो उनको हज करते हुए लब्बैक पुकारते हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा और औलिया उलमा शुहदा की हयाते बरज़ख़िया अगरचे हयाते दुनियवीया से अफ़ज़ल, आला है मगर उस पर अहकामे दुनयवीया जारी नहीं उनका तरेका तक़सीम होगा उनकी अज़्वाज इद्दत करेंगी और हयाते बरज़ख़ीया का सुबूत तो अवाम के लिए भी है हदीस में है मिस्ल मोमिन की उस ताइर की तरह जो क़फ़स में है कि जब तक वह क़फ़स में है उसकी उड़ान उसी तक है और जब उस से आज़ाद हुआ तो उसकी उड़ान कितनी होगी बाद मरने के समआ, बसर और इद्राक आम लोगों का, यहां तक कि कुफ़्फ़ार का ज़ाइद हो जाता है और यह तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअत का इज्माई अक़ीदा है और अहादीसे सहीहा से साबित है जो ख़िलाफ़ करे गुमराह है कि जिस किसी की क़ब्र पर आदमी जाता है अगर साहिबे क़ब्र उसको पहचानता था तो उसको पहचानता है और उस से तसल्ली पाता है उसकी आवाज़ बल्कि उसकी पैछल सुनता है और अगर नहीं पहचानता था तो इतना ज़रूर जानता है कि एक मुसलमान मेरी क़ब्र पर आया है

عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

का कुरआन[69] जिस में अस्लन कजी नहीं[70] कि कहीं वोह डरें[71] **अल्लाह** एक मिसाल बयान फ़रमाता है[72] एक गुलाम

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

में कई बद ख़ू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या इन दोनों का ह़ाल

مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

एक सा है[73] सब ख़ूबियां **अल्लाह** को[74] बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते[75] बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और इन को

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

भी मरना है[76] फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे[77]

---

69 : ऐसा फ़सीह़ जिस ने फ़ुसह़ा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया 70 : या'नी तनाक़ुज़ व इख़्तिलाफ़ से पाक। 71 : और कुफ़्र व तक्ज़ीब से बाज़ आएं। 72 : मुश्रिक और मुवह़्ह़िद की 73 : या'नी एक जमाअ़त का गुलाम निहायत परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी त़रफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है, वोह ह़ैरान है कि किस का हुक्म बजा लाए और किस त़रह़ तमाम आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस गुलाम को जब कोई ह़ाजत व ज़रूरत पेश हो तो किस आक़ा से कहे, ब ख़िलाफ़ उस गुलाम के जिस का एक ही आक़ा हो वोह उस की ख़िदमत कर के उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई ह़ाजत पेश आए तो उसी से अ़र्ज़ कर सकता है, उस को कोई परेशानी पेश नहीं आती। येह ह़ाल मोमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है, उसी की इ़बादत करता है और मुश्रिक जमाअ़त के गुलाम की त़रह़ है कि उस ने बहुत से मा'बूद क़रार दे दिये हैं। 74 : जो अकेला है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 75 : कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। 76 : इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे, उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना ह़माक़त है, कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ह़यात अ़त़ा फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें क़ाइम हैं। 77 : अम्बिया उम्मत पर हुज्जत क़ाइम करेंगे कि उन्हों ने रिसालत की तब्लीग़ की और दीन की दा'वत देने में जोहदे बलीग़ सर्फ़ फ़रमाई और काफ़िर बे फ़ाएदा मा'ज़िरतें पेश करेंगे। येह भी कहा गया है कि मुराद इख़्तिसामे आ़म है कि लोग दुन्यवी हुक़ूक़ में मुख़ासमा करेंगे और हर एक अपना ह़क़ त़लब करेगा।

الزُّمَر ٣٩ ٨٥٤ M-09825696131 وَمَالِيَ ٢٣

عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

کا قرآن ف٦٩ جس میں اصلاً کجی نہیں ف٧٠ کہ کہیں وہ ڈریں ف٧١ اللہ ایک مثال بیان فرماتا ہے ف٧٢ ایک غلام

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

میں کئی بدخو آقا شریک اور ایک نرے ایک مولیٰ کا کیا ان دونوں کا حال

مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

ایک سا ہے ف٧٣ سب خوبیاں اللہ کو ف٧٤ بلکہ ان کے اکثر نہیں جانتے ف٧٥ بے شک تمہیں انتقال فرمانا ہے اور ان کو

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

بھی مرنا ہے ف٧٦ پھر تم قیامت کے دن اپنے رب کے پاس جھگڑو گے ف٧٧

ف٦٩ ایسا فصیح جس نے فُصَحاء و بُلَغاء کو عاجز کر دیا ف٧٠ یعنی تناقُض و اِختلاف سے پاک۔ ف٧١ اور کفر و تکذیب سے باز آئیں۔ ف٧٢ مشرک اور مُوَحِّد کی ف٧٣ یعنی ایک جماعت کا غلام نہایت پریشان ہوتا ہے کہ ہر ایک آقا اسے اپنی طرف کھینچتا ہے اور اپنے اپنے کام بتاتا ہے وہ حیران ہے کہ کس کا حکم بجالائے اور کس طرح تمام آقاؤں کو راضی کرے اور خود اس غلام کو جب کوئی حاجت و ضرورت پیش ہو تو کس آقا سے کہے بخلاف اس غلام کے جس کا ایک ہی آقا ہو وہ اس کی خدمت کر کے اسے راضی کر سکتا ہے اور جب کوئی حاجت پیش آئے تو اسی سے عرض کر سکتا ہے اس کو کوئی پریشانی پیش نہیں آتی یہ حال مومن کا ہے جو ایک مالک کا بندہ ہے اسی کی عبادت کرتا ہے اور مشرک جماعت کے غلام کی طرح ہے کہ اس نے بہت سے معبود قرار دے دیئے ہیں۔ ف٧٤ جو اکیلا ہے اس کے سوا کوئی معبود نہیں۔ ف٧٥ کہ اس کے سوا کوئی مستحق عبادت نہیں۔ ف٧٦ اس میں کفار کا رد ہے جو سیّدِ عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی وفات کا انتظار کیا کرتے تھے انہیں فرمایا گیا کہ خود مرنے والے ہو کر دوسرے کی موت کا انتظار کرنا حماقت ہے، کفار تو زندگی میں بھی مرے ہوئے ہیں اور انبیاء کی موت ایک آن کے لیے ہوتی ہے پھر انہیں حیات عطا فرمائی جاتی ہے۔ اس پر بہت سی شرعی براہین قائم ہیں۔ ف٧٧ انبیاء امت پر حجت قائم کریں گے کہ انہوں نے رسالت کی تبلیغ کی اور دین کی دعوت دینے میں جُہدِ بلیغ صرف فرمائی اور کافر بے فائدہ معذرتیں پیش کریں گے۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ مراد اِختصامِ عام ہے کہ لوگ دنیوی حقوق میں مُخاصَمہ کریں گے اور ہر ایک اپنا حق طلب کرے گا۔